Indian J. Soc & Pol. 03(02): 2016: 127-132 **ISSN 2348-0084 (P)**
ISSN 2455-2127 (O)

गाजीपुर जनपद के नगरों का उद्भव एवं विकास

ब्रजेश कुमार यादव[1]
[1]प्रवक्ता– भूगोल,संत बूला सत्यनाम दास,वीरबल पी0जी0 कालेज,दुल्लहपुर–गाजीपुर

ABSTRACT

इतिहासविदों में यह बहस का विषय है कि कब और कैसे मानव अधिवास अध्ययन क्षेत्र में स्थापित हुए। गाजीपुर जनपद में किये गये पुरातात्विक अन्वेषणों से प्रमाणित होता है कि प्रारम्भिक मेसोलिथिक काल में विंध्य प्रदेश से गंगा मैदान की ओर आदिम शिकारी जातियों ने स्थानान्तरण किया था तथा अपने झोपड़ियों का निर्माण झील के तटीय भागों में प्रारम्भ किया। कई जीवों के अवशेष तथा मानव के अस्थि पंजर (10000–7000 ईसा पूर्व), पत्थर के औजारों तथा पशुओं की हड्डियों के द्वारा प्रमाणित होता है कि यहाँ पर निवास करने वाली आदिम जातियाँ घुमक्कड़ प्रकृति की थी, तथा पशु पालन व शिकार करके अपना जीवन यापन करती थी। इससे प्रमाणित है कि प्रारम्भ में यहाँ पर आदिम मानव जातियाँ निवासित थी। इन आदिम जातियों के निवास स्थल पर प्रोटो इण्डिकस या प्रोटो आस्ट्रेलायड्स और मुन्डो इसपेकिंग पिपुल वर्ग के द्वारा अधिकार दिया गया है, जिन्होने चावल की कृषि, गन्ने से चीनी निर्माण, कपास से कपड़े की बुनाई तथा बेटल बान्ईन के उपयोग की कला का अविष्कार किया एवं कृषि, ग्रामीण अधिवास का प्रादुर्भाव किया।

KEYWORDS: *गाजीपुर, जनांकिकी, नगर अवस्थापना*

नगरों के भौगोलिक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नगरों के उद्भव एवं विकास को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों की व्याख्या करना, उनके कार्यों व आकारिकी में ऐतिहासिक घटनाओं के प्रभाव को विश्लेषित करना है क्योंकि ''वर्तमान भूदृश्य लम्बे समय के सांस्कृतिक प्रभाव एवं भौतिक वातावरण के परिवर्तन की देन है(शर्मा,1990 पृ062)। नगरों के उद्भव एवं विकास को निम्न कालों में श्रेणीबद्व कर सकते हैं।

प्राग्ऐतिहासिक काल :

गाजीपुर जनपद गंगा के मैदानी भाग में स्थित हैं। यह क्षेत्र हमेशा से देश के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस क्षेत्र की गम्यता (नदियों तथा सड़क यातायात) तथा उपजाऊ मिट्टियों ने हमेंशा से मानव मन को मोहित किया है, जिसके परिणम स्वरूप यहाँ पर मानव अधिवासों व व्यवसायों तथा साम्राज्यों का विकास होता रहा है। सांस्कृतिक तौर पर अध्ययन क्षेत्र विभिन्न प्रजातियों एवं इंथनिक ग्रुपों का संगम स्थल रहा है। जिसने भारत की वर्तमान संश्लिष्ट संस्कृति के विकास को निर्धारित किया है। (गुहा, 1937) के अनुसार इस क्षेत्र में 6 प्रजातीय वर्गो ''नेग्रीटो, प्रोटो–आस्टेलायड, मंगोलायड, मेडिटीरेनियम, पश्चिमी चौडे सिर वाली प्रजाति, नार्डिक'' का प्रभाव प्राचीन काल से ही रहा है।

इतिहास कारों के अनुसार गंगा घाटी के दूसरे भागों की भाँति यह क्षेत्र भी प्रथमतः प्रोटो इण्डिकस, प्रोटो आस्टेलायड एवं निग्रीटो काल में आबाद हुआ था, जिन्हे बाद में सबरास, दाससाज, दस्यु, किराताज, भर, नीशादास आदि नामों से सम्बोधित किया गया है(जैन,1964,पृ143.144)। इसके बाद यह क्षेत्र द्रविणों के अधिकार में आया जिनकी सभ्यता प्रोटो–आस्ट्रेलायड की तुलना में अधिक विकसित थी, उन्होंने ग्रामीण संस्कृति की अपेक्षा नगरीय संस्कृति के विकास पर अधिक रूचि दिखलायी तथा अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार को विकसित किया(मजूमदार,1977,पृ11.18)। तत्पश्चात् 2500–2000 बी0सी0 के बीच मध्य एशिया से आर्यों का आगमन हुआ और वे सर्वप्रथम पंजाब मैदान में अपने अधिवासों का विकास किये। तत्पश्चात् उनकी दो शाखायें दक्षिण–पूरब एवं पूरब की ओर गंगा घाटी में फैल गयी। आर्यो की पूर्ववती प्रवास में उन्होंने मुख्य नदी घाटियों के किनारे वैदिक ऋषियों के आश्रमों का निर्माण कराया। ये आश्रम आर्य संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देते थे तथा बाद में इन दो प्रजातीय वर्गों के सम्मिश्रण से देश के वर्तमान संश्लिष्ट हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ है।

इतिहासविदों में यह बहस का विषय है कि कब और कैसे मानव अधिवास अध्ययन क्षेत्र में स्थापित हुए। गाजीपुर जनपद में किये गये पुरातात्विक अन्वेषणों से प्रमाणित होता है कि प्रारम्भिक मेसोलिथिक काल में विंध्य प्रदेश से गंगा मैदान की ओर आदिम शिकारी जातियों ने स्थानान्तरण किया था तथा अपने झोपड़ियों का निर्माण झील के तटीय भागों में प्रारम्भ किया। कई जीवों के अवशेष तथा मानव के अस्थि पंजर (10000–7000 ईसा पूर्व), पत्थर के औजारों तथा पशुओं की हड्डियों के द्वारा प्रमाणित होता है कि यहाँ पर निवास करने वाली आदिम जातियाँ घुमक्कड़ प्रकृति की थी, तथा पशु पालन व शिकार करके अपना जीवन यापन करती थी। इससे प्रमाणित है कि प्रारम्भ में यहाँ पर आदिम मानव जातियाँ निवासित थी। इन आदिम जातियों के निवास स्थल पर प्रोटो इण्डिकस या प्रोटो आस्ट्रेलायड्स और मुन्डो इसपेकिंग पिपुल वर्ग के द्वारा अधिकार दिया गया है, जिन्होने चावल की

1: Corresponding Author

कृषि, गन्ने से चीनी निर्माण, कपास से कपड़े की बुनाई तथा बेटल बार्न्इन के उपयोग की कला का अविष्कार किया(वही पृ17) एवं कृषि, ग्रामीण अधिवास का प्रादुर्भाव किया।

बाद में अध्ययन क्षेत्र गंगा घाटी के दूसरे भागों की भाँति द्रविणों के प्रभाव में आया; जिन्होने नगर निर्माण, वस्तु कला, नौकायन, सिक्कों के उपयोग तथा गेंहूँ की कृषि का अविष्कार किया। हिन्दुओं के प्रसिद्ध ग्रंथ ऋग्वेद में आये संदर्भो के आधार पर कहाँ जा सकता है कि इन आदिम जातियों को आर्यो ने दस्यु या असुर कहकर पुकारा है। ऋग्वेद में नगरों एवं किलों का विस्तृत वर्णन मिलता है(मुखर्जी,1950)। अतः आर्यों के आने से पूर्व अध्ययनगत क्षेत्र आदिवासियों की विकसित सभ्यता से प्रभावित था। आर्यों के आगमन के बाद ये आदिम जातियाँ (भर एवं भील) 12वीं शताब्दी में अध्ययन क्षेत्र के आन्तरिक भागों में निवास करती थी।

सर्व प्रथम आर्यो का आगमन पंजाब मैदान में लगभग 2500 वर्ष ईसा पूर्व में हुआ, जहाँ से उनका स्थानान्तरण दक्षिण–पूरब की ओर सम्भवतः दो शाखाओं में हुआ(प्रसाद,1947पृ18)। प्रथम शाखा ने गंगा घाटी में काशी (वर्तमान काशी) पर अपना आधिपत्य जमाया तथा दूसरी शाखा हिमालय से संलग्न घाघरा घाटी को अधिकृत करते हुए प्रसिद्ध कौशल राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी अयोध्या थी। उन्होने अनार्य जातियों पर विजय प्राप्त करते हुए सातवीं शताब्दी के अन्त तक सम्पूर्ण गंगा घाटी में आर्य सभ्यता का विकास किया(चौधरी 1965, पृ 53)। प्रारम्भिक वैदिक काल में आर्य अर्द्ध घुमक्कड़ जातियों की भाँति पशु पालक अर्थव्यवस्था में संलग्न थे। धीरे–धीरे उनकी रूचि कृषीय कार्यो की ओर बढ़ी और उनके जीवन में स्थायित्व आता गया। उन्होने अनार्य जातियों को श्रमिकों व दासों की तरह उपयोग करते हुए नदी घाटियों व उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में वनों को साफ कर कृषि कार्य प्रारम्भ करते हुए विशाल ग्रामों की स्थापना(चटर्जी,1983 पृ 216.222) प्रारम्भ में उन्होने अनार्य जातियों की भाँति पुरवे प्रकार के अधिवासों की स्थापना की(वही)। गृह अधिवास की सबसे छोटी इकाई थी, जिसके बाद कुल होता था जिसका मुखिया परिवार का सबसे बड़ा पुरूष सदस्य होता था, तथा जिसे कुलपा के नाम से पुकारा जाता था।

अधिवास के चारों तरफ का क्षेत्र ग्राम्य क्षेत्र कहलाता था, जिसके बाद वृज (वन एवं चारागाह) स्थित रहते थे। अधिवास अधिकतर लकड़ी तथा बाँस के बने होते थे, यहाँ तक कि प्रदेश में आर्य सभ्यता का पूर्ण विकास हो जाने के बाद भी आर्य जनसंख्या मुख्यतः अनुकूल स्थानों विशेषकर नदी–घाटियों के उपयुक्त स्थलों पर ही केन्द्रित थी, जब कि आंशिक भाग अनार्य जातियों द्वारा निवासित था वैदिक ऋषियों ने विभिन्न आश्रमों की स्थापना करायी थी, जिनका मुख्य उद्देश्य आर्य सभ्यता का प्रचार व प्रसार करना होता था। अनार्य जातियाँ (द्रविण) आर्य सभ्यता के प्रसार को रोकते थे, जिससे उन्हे असुरों की संज्ञा आर्यों द्वारा दी जाती थी। वास्तव में राम–रावण का युद्ध दो ब्यक्तियों का युद्ध नही था; अपितु दो संस्कृतियों (आर्य संस्कृति का द्रविण संस्कृति पर अध्यारोपण) की लड़ाई थी। राम आर्य संस्कृति के प्रणेता थे; जबकि रावण द्रविण संस्कृति का संरक्षक था। गंगा नदी के किनारे स्थित (इलाहाबाद) में भारद्वाज आश्रम इसका साक्षी है; जहाँ से आर्य संस्कृति का प्रसार होता था। आर्यों के शक्ति संचयन के परिणाम स्वरूप कई शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ। अध्ययन क्षेत्र के परम्परागत इतिहास के अनुसार यहाँ महाभारत युद्ध तक मुख्यतः पुराणों से ही जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि महाभारत एवं रामायण यत्र–तत्र महत्वपूर्ण सूचनाओं एवं दूसरी परम्परागत् घटनाओं की जानकारी देते हैं।

गाजीपुर के उपनगरीय भागों में जमदाग्नि (जमानियाँ) ऐतिहासिक एक सुसम्पन्न भू–भाग था। जमानियाँ के विषय में एक गाथा प्रचलित है कि जमदाग्नि ऋषि और उनकी पत्नी गंगा के तट पर एक झोपड़ी बनाकर रहते थे। यह झोपड़ी जमानियाँ के वर्तमान कस्बे के निकट थी, और उसी ऋषि के नाम पर जमानियाँ का नाम पड़ा(कनिंघम पृ62)। महाभारत के अनुसार जब हैहया राजा कत्रवीर्य अपनी सेना के साथ इस झोपड़ी के पास पहुँचा, तो जमदाग्नि ऋषि कामधेनु की सहायता से उनका आतिथ्य सत्कार किया, राजा आश्चर्य चकित हुआ, किन्तु उनके प्रति कृतज्ञ होने के बदले बलपूर्वक उनकी काम धेनू को ले गया, तत्पश्चात जमदाग्नि ऋषि के पुत्र परशुराम ने कत्रवीर्य को पराजित कर कामधेनु को वापस लाकर अपने पिता के चरणों में समर्पित कर दिया(मजूमदार एण्ड पुसालकर, पृ284)।

भीतरी गाँव का प्राचीन अवशेष प्रमाणित करते हैं कि यह क्षेत्र बौद्धों के हाथ में था, जिन्होने गुप्त काल में अपने धार्मिक विचार के साथ इसे स्थापित किया था। उनमें अनेक धार्मिक विचारों के साथ इसे स्थापित किया था, उनमें अनेक शिल्प कलाएँ और बुद्ध की मूर्ति उत्तम संग्रह के रूप में उपलब्ध हैं, एक प्रसिद्ध लाट उपलब्ध है जिसपर स्कन्दगुप्त की कुछ उल्लेखनीय बाते मुद्रित हैं। एक दूसरी लाट जो काले और लाल पत्थर की है, और जिसकी ऊंचाई 9 मीटर है, एक खुदरे पत्थर पर खड़ी है, इस पर गुप्त काल के अच्छे रूप रंग चरित्र की 19 पंक्तियाँ है, मुख्य रूप से यह स्कन्द गुप्त के शासन को संकेत करती हैं, और उस पर भगवान विष्णु की पवित्र प्रतिमा बनी हुई है।

महाभारत युद्ध के पूर्व मगध में बरहद्रथ के वंश की उत्पत्ति काशी राज्य राजनैतिक शक्ति की प्राप्ति से हुई, बरहद्रथ राजा (जरासन्ध) जो कृष्ण, कौरव और पाण्डवों का समकालीन था, जरासन्ध अनेक राज्यों को जैसे मथुरा को स्थापित करने में सफल हुआ और यह मथुरा उस समय उसके दामाद कामसा के शासन में था, यह माना जाता है कि जरासन्ध गाजीपुर के परिक्षेत्र को अपने में नहीं मिलाया, बल्कि वहाँ का अपना राजा बना दिया, काशी राजा की पुत्री का विवाह विचित्र वीर्य (कौरव राजकुमार) से हुआ,

यह भीष्म का सौतेला भाई था और पाण्डवों का पितामह था। यहाँ तक की महाभारत युद्ध के समय काशी का अपना राज्य था, जिसका नाम काशी राजा वीर्यमान था।

महाभारत काल के बाद शासन में जिस वंश की प्रमुखता थी उसी वंश का राजा ब्रम्हदत्त था, जिसकी चर्चा प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य में, मुख्य रूप से जातक कहानियों में है।

इस क्षेत्र की महानता को जैन भी प्रमाणित करते हैं और इस काल के तीर्थकर के पिता अश्वसेन ने जो काशी के राजा थे का प्रतिनिधित्व किया। तीर्थकर को पार्श्व भी कहा गया, जिन्होने 777 ईसा पूर्व महाबीर के 250 वर्ष पहले निवार्ण प्राप्त किया था।

महावीर और बुद्ध के जन्म के पहले दो या तीन शताब्दी में सम्पूर्ण उत्तर भारत 16 मुख्य महाजनपदों में विभक्त हो गया। यह प्रारम्भिक बौद्ध एवं जैन साहित्य में सालसा महाजनपद के रूप में प्रचलित हुआ, मगध, विदेह, काशी, कोसल, उत्तरपंचाल तथा कुरू अथवा इन्द्रप्रस्थ में सम्पूर्ण विहार और उत्तर प्रदेश का

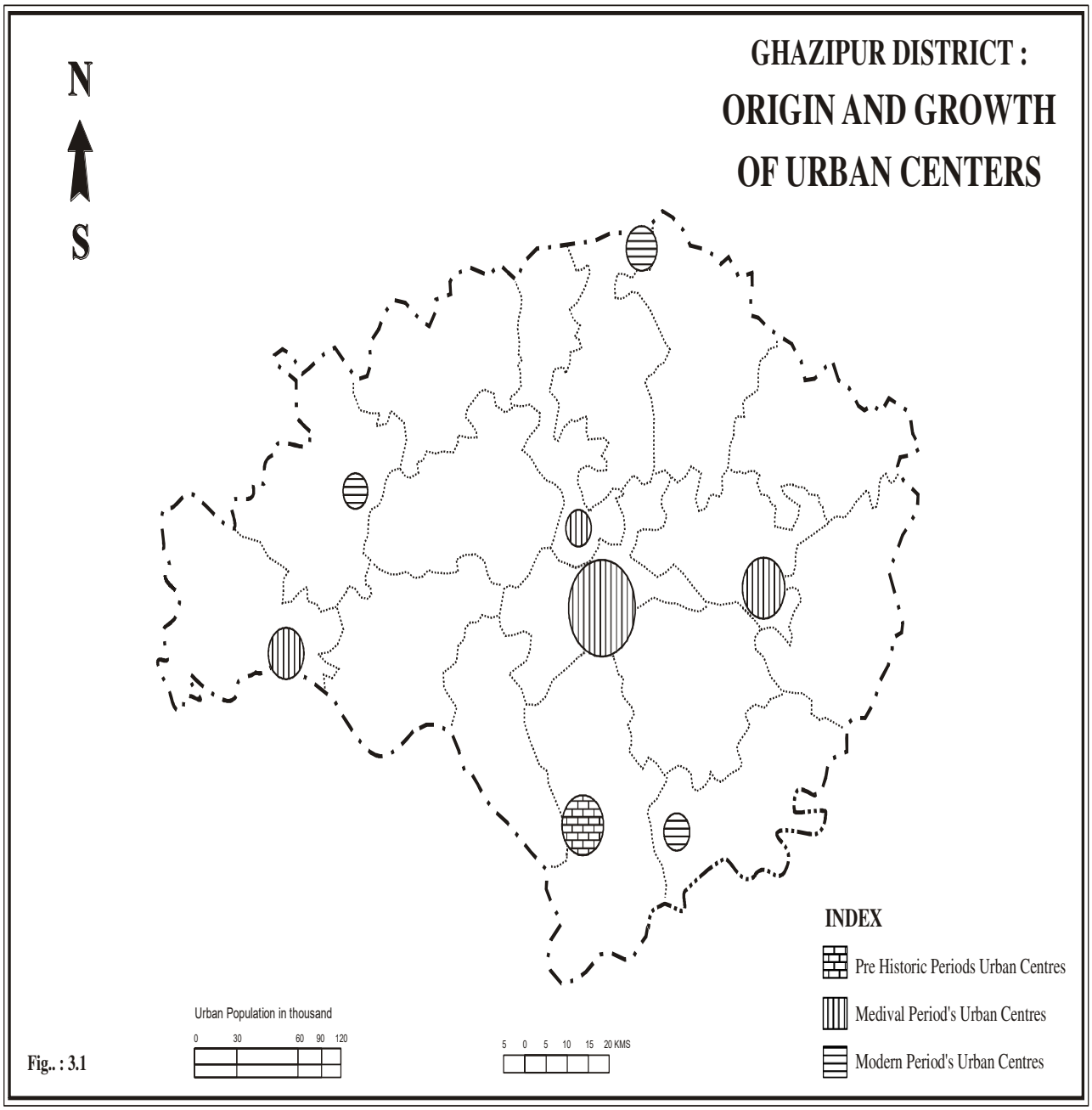

Fig.. : 3.1

अधिकांश भाग सम्मिलित था, काशी का राज्य इस युग में प्रमुख था, और वर्तमान गाजीपुर जनपद को सम्मिलित किये हुए था।

वर्तमान जनपद गाजीपुर का भूतकाल अत्यन्त वैभव शाली है क्योंकि इसका सम्पूर्ण क्षेत्र आर्य सभ्यता के मुख्य केन्द्र काशी के राज्य का एक भाग था। इस सम्बन्ध में अनेक गाथाऐं सुनी जाती है और अनेक मूल्यवान प्रमाण जैसे शिल्पकला, प्रतिमाऐं, सिक्के, लम्बी ईंट इत्यादि यहाँ पायी गयी और विभिन्न प्रकार के मन्दिरों, स्तूपों, मठों के अवशेष जनपद के विभिन्न स्थानों पर फैले हुए है, ये तथ्य प्रमाणित करते हैं कि यह जनपद व्यवस्थित सामाजिक जीवन प्रारम्भिक समय से प्राप्त किये हुए था। 1879 में कार्ललाई का एक स्मृति चिन्ह सैदपुर के पास उपलब्ध है, जो सुदूर भूतकाल की बातों को प्रमाणित करता है। नदियों में अनेक प्रकार के पत्थर मछलियों की हड्डियाँ और भूतकाल की सभ्यता से सम्बन्धित अनेक प्रमाण उपलब्ध है।

जनपद में अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों में सैदपुर से लेकर औड़िहार तक जो जौनपुर मार्ग के किनारे है, फैले हुऐ टिलो का ढेर है, औड़िहार जो गाजीपुर के पश्चिम 41 किमी0 दूरी पर स्थित सैदपुर तहसील का एक छोटा सा गाँव है, यह एक विशाल खेरा पर स्थित हैं। समझा जाता है कि यह प्राचीन शहर का अवशेष है। यहाँ की जमींन की ऊपरी सतह ईटों और पत्थरों के टुकड़ों से ढ़की हुई है। सैदपुर के पश्चिम का अवशेष कम से कम बौद्ध काल के समय का माना जाता है। यह भी माना जाता है कि अशोक ने जिंन मठों की स्थापना की थी; उन्हीं में से कुछ मठों के अवशेष यहाँ हैं। बुद्धपुर या जहुरगंज एक छोटा गाँव जो वाराणसी और सैदपुर, कस्बे को जाते हुए मार्ग के उत्तर में स्थित है। गंगा के निकट एक विशाल टिले पर पाया जाता है। एक दूसरा टीला कार्ललाई मार्ग के उत्तर में स्थित है, जिसके अवशेष पाषाण युग से सम्बन्धित बताये जाते हैं। इन टीलों के ऊपर कुछ मन्दिर और गृह उपलब्ध हैं, उनमें एक पत्थर पाया गया जिसपर पाली भाषा में शब्द लिखा हुआ है, ऐसा माना जाता है कि उस पर उस स्थान का नाम लिखा हुआ है(गाजीपुर गजेटियर,पृ0151)। रामतवाकू गाँव जो जहुरगंज गाँव के पश्चिम में स्थित है वहाँ एक विशाल टिला है जो ईंट और पत्थरों के टुकड़ों से ढका हुआ है। औड़िहार भी जहाँ स्थित है उसके निचले सतह में ईंट और पत्थरों के छोटे–छोटे टुकड़े भरे हुए है। इस स्थान से थोड़ी दूरी पर दिवालों में पत्थर के काम पाये जाते है। यह क्रम मसवानडीह जो सैदपुर के 3.2 किमी0 और जहुरगंज के उत्तर में 1.6 किमी0 तक स्थित है, यह क्षेत्र विशाल टिलाओं से परिपूर्ण है। इसी स्थान पर एक महान पहाड़ी कृषि युक्त टिला है, जो जंगल से ढका हुआ है। यह पूरब से पश्चिम 457 मीटर लम्बी है तथा इसकी चौड़ाई 205 मी0 से 183 मीटर है। इसके उत्तर में कलवारी पोखरा नाम का एक तालाब है। इसके दोनों किनारे बहुत ऊँचे है एक और टीला 6 से 15 मीटर ऊँचा है जो एक विशाल शहर को प्रदर्शित करता है। सम्भवतः क्रेलुलेन्द्रपुरा का एक भाग है। यह पहाड़ीनुमा टिला जो अबतक पूर्णरूपेण खोदा नहीं गया है, माना जाता है कि यहाँ बड़ी–बड़ी इमारते ध्वस्त हो गयी है, यहाँ जो सिक्के उपलब्ध हो रहे है, वे वौद्ध काल के प्रारम्भिक दिनों से सम्बन्धित बतलाये जाते है।

वर्तमान गाजीपुर अत्यन्त प्राचीन है। चीनी यात्री ह्वेनसांग जो भारत में 630 से 644 ए0डी0 में रूका था। इस स्थान का भ्रमण किया और वर्णन भी किया(वील, पृ0 61)। वह अपने अभिलेखों में कहता है कि यह स्थान चेन्चू के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ युद्ध के स्वामी का राज्य माना जाता था, इससे सम्बन्धित विभिन्न शब्द प्रयोग में आते है जैसे युद्धपतिपुरा, युद्धरनपुरा तथा गरजपतिपुरा। कनिधंम के अनुसार चेन्च्यू नाम का ये समानार्थी संस्कृत शब्द है और यह विश्वास किया जाता है कि गाजीपुर कस्बे का वर्तमान स्थान एक प्राचीन स्थान है(कनिंघम,1907,355)।

मध्य काल (12 वीं शताब्दी से लेकर 1856) :

836 ई0 से 882 ई0 के बीच गुजर प्रतिहर्ष उत्तर भारत के विशाल क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया, और कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, निःसन्देह गाजीपुर 9 वीं शताब्दी के मध्य गुजर प्रतिहर्ष के शासन में आ गया, लगभग 10 वीं शताब्दी के अन्त में गुजर प्रतिहर्ष का गाजीपुर पर वर्चस्व नाम मात्र का हो गया, 1226 ई0 के लगभग सारनाथ में स्थापित एक शिलालेख से ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय गाजीपुर महिपाल राजा के आधीन हो गया। सम्बत् 1076 में गंग देव त्रिभुक्ति पर शासन कर रहा था, यह गंगदेव सम्भवतः त्रिपुरी का शासक था। यदि उसका राज्य तीहुर्त तक फैला हुआ था, तो इस काल में गाजीपुर उसी के शासन में रहा होगा। गंगदेव एवं महिपाल दोनो राजा आपस में निरन्तर युद्ध करते रहे। गाजीपुर क्रमशः एक दुसरे के अधीन होता रहा और अन्त में गंगदेव के अधीन हो गया। इसी बीच भारत पर महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ और 1019 ई0 में उसने कन्नौज को हिला दिया।

1194 तक मुस्लिम विजय किसी भी क्षेत्र में प्रभावशाली नहीं रहा। जब मुहम्मद गोरी कन्नौज के राजा जयचन्द्र को परास्त कर वाराणसी तक कब्जा करके वाराणसी को राजधानी बनाया।

जौनपुर के करीब 1322 ई0 में जफराबाद स्थापित होने के साथ ही मुस्लिम राज्य का प्राकट्य हुआ, जिसका श्रेय मुहम्मद विनतुगलक और उसके उत्तराधिकारी फिरोजशाह थे। जिनका मुख्य उद्देश्य उपनिवेशवाद की नीति मुसलमानों के साथ रही, सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि जंगीपुर के मीर अमानुल्लाह (1104 से 1713) गाजीपुर के नीव डालने वाले थे। जब फिरोजशाह जौनपुर को अपने कब्जे में किये, तो उन्होने अपना निवास स्थान इसी जिले (गाजीपुर) को बनाया और यहाँ का शासन अपने विश्वासपात्र

मालिक सरवरख्वाजहाँ को बनाया। इसके बाद ख्वाजहाँ के ही पुत्र जफरखाँ और नसीर खाँ और उनके भतीजे अलाउद्दीन खाँ थे।

अकबर के समय में गाजीपुर मुगल साम्राज्यो के अधीन आया और उनके शासन के बाद सिरकार की राजधनी उसके कब्जे में हुई जो इलाहाबाद राज्य के अर्न्तगत थी। इस सिरकार के अन्तर्गत 19 महल थे अथवा परगना जिसके अन्तर्गत करीबी भाग बलिया, सलाहाबाद और आजमगढ़ रहा। आइने–अकबरी के सूचना पर उस जिले की स्थिति कृषि और राजस्व पर निर्भर थी। गाजीपुर का मुहाल का कृषि क्षेत्र 12325 बीघा, जिसका राजस्व 570350 डैम्स रहा, जिसके मुख्य मालिक कायस्थ और राजपूत रहे। पचोत्तर मुख्य रूप से राजपूतो द्वारा निवासित रहा जिसका क्षेत्रफल 13679 बीघा और जोतने योग्य भूमि तथा उत्पादन का राजस्व 698204 डैम्स रहा। बहरियाबाद, जहूराबाद, गोहमा, मुहम्दाबाद, जमानियाँ, करण्डा, जंगीपुर, सैदपुर, बलाइच, शादियाबाद, खानपुर एवं महाइच महल थे। इन महलों में मुहम्दाबाद, जंगीपुर, सैदपुर, गाजीपुर विकसित होकर इस काल के प्रमुख नगरीय केन्द्र बने।

आधुनिक काल (1857 के बाद) :

ब्रिट्रिश शासन काल में अध्ययन क्षेत्र में शान्ति व सुरक्षा का वातावरण रहा, गाजीपुर का निर्माण 1818 ई0 में एक अलग जनपद के रूप में किया गया, जिसके फलस्वरूप गाजीपुर को विकास का अवसर मिला। अध्ययन क्षेत्र में ब्रिट्रिश शासन के विरूद्ध असंतोष भड़का। 17 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जनपद में कोई पक्की सड़क नहीं थी।

प्रमुख प्राचीन सड़क मार्ग वाराणसी से गोरखपुर था, जो वर्तमान समय में राष्ट्रीय मार्ग के रूप में गाजीपुर का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रिट्रिश शासन काल में सड़क मार्गो के सुधार एवं निर्माण हेतु जोर दिये गये तथा 1870 ई0 में 678.3 कि0मी0 सड़कों का निर्माण अध्ययन क्षेत्र में कराया गया था। अध्ययन क्षेत्र में 200. 8 कि0मी0 पक्की सड़कों की लम्बाई थी, जो गाजीपुर को मऊ, घोसी, दोहरीघाट, बड़हलगंज, कौड़ीराम, गोरखपुर, को जोड़ती थी। सभी रेलवे स्टेशन को सड़क मार्ग से जोड़ा गया। रेल मार्गो के निर्माण ने अध्ययन क्षेत्र की गम्यता में वृद्वि की। इस समय अध्ययन क्षेत्र में 193 कि0मी0 रेल मार्ग (गाजीपुर) वाराणसी रेलमार्ग, प्रमुख स्टेशन, नन्दगंज, सैदपुर, औड़िहार, मऊ–वाराणसी रेलमार्ग, प्रमुख स्टेशन, दुल्लहपुर, जखनियाँ, सादात, माहपुर, जौनपुर–बलिया रेल मार्ग प्रमुख स्टेशन सैदपुर, नन्दगंज, गाजीपुर, यूसुफपुर, मुहम्मदाबाद, करमुद्दीनपुर मुगलसराय–बक्सर रेल मार्ग प्रमुख स्टेशन जमानियाँ, दिलदारनगर, गहमर आदि प्रमुख स्टेशन हैं। इन रेल मार्गो व रेलवे स्टेशन नें नगरीय केन्द्रों के उद्भव एवं विकास हेतु अनुकूल वातावरण उपस्थित किया है। इसके फलस्वरूप जखनियाँ, दुल्लहपुर, नन्दगंज, माहपुर, औड़िहार, यूसुफपुर करमुद्दीनपुर, गहमर आदि भविष्य में उदित होने वाले नगरीय केन्द्र होगें जिसमे गहमर एशिया का सबसे बड़ा गाँव है,(ओझा,2005,73)तथा वर्तमान में सादात, सैदपुर, दिलदारनगर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर नगरीय केन्द्र के रूप में प्रकाश में आ चुके हैं। नये प्रशासनिक मुख्यालयों यथा जनपद, तहसील, परगना, विकासखण्ड आदि ने आर्थिक व व्यापारिक क्रियाओं को सम्पन्न कराने लगे, जिसके फलस्वरूप बाजारों, हाटों, व व्यापारिक केन्द्रों का प्रादुर्भाव हुआ। जमानियाँ व मुहम्मदाबाद प्रशासनिक सुविधाओं के कारण आज महत्वपूर्ण नगरीय केन्द्र बन गये हैं। सामान्य कार्यों व प्रशासन में सुधार, स्वास्थ्य की एलोपैथिक प्रणाली के प्रादुर्भाव, महामारी, यथा प्लेग, हैजा आदि के नियन्त्रण नें जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित किया जिसके फलस्वरूप नये अधिवासों का उदय आन्तरिक क्षेत्रों में हुआ। अधिकांश ग्राम जिनके नाम के बाद पुर, पुरवा, कटरा, कला, खुर्द, गंज, आदि लगे होते हैं। इनका उद्भव इसी काल में हुआ है तथा पहले से स्थित पुराने ग्राम के आकार व कार्यों में वृद्धि हुई हैं। इसी प्रकार स्थानीय प्रमुखों ने कई बाजारों, मेलों, व्यापारिक केन्द्रों के विकास में योगदान दिया, जो क्रय–विक्रय के प्रमुख केन्द्रों के रूप में विकसित हुये हैं। इनमें जखनियाँ, मनिहारी, देवकली, मरदह करण्डा, बाराचौर, भाँवरकोल, रेवतीपुर, कासिमाबाद आदि क्षेत्रों में विकसित होने वाले प्रमुख नगरीय केन्द्र के रूप में आयेगें।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जनपद में सामाजिक आर्थिक विकास का नया युग आरम्भ होता है। जमींनदारी उन्मूलन, चकबन्दी, सड़कों के विकास, बिजली, सिंचाई तथा बैकिंग एवं संचार सुविधायें व स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास के फलस्वरूप कृषि उत्पादनों में सुधार आया। 1952 में सामुदायिक विकासखण्डों की स्थापना तथा परगना, तप्पा के स्थान पर न्यायपंचायतों के निर्माण ने नये नगरों/बाजारों को जन्म दिया। ऐसे सभी ग्राम जिनकी आबादी 1500 से अधिक थी, उन्हे मुख्य सड़कों से जोड़ा गया। ढाँचागत सुविधाओं के विकास ने कई ग्रामों को ग्रागर या नगरीय केन्द्रों के रूप में विकसित किया जिसमें सादात, बहादुरगंज, दिलदारनगर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर जैसे नगरों का विकास तेजी से हुआ, साथ ही विकास खण्डों की स्थापना के फलस्वरूप विकासखण्ड मुख्यालय यथा जखनियाँ, मनिहारी, देवकली, मरदह, करण्डा, बाराचौर, भाँवकोल, भदौरा व रेवतीपुर, आदि भविष्य में विकसित होने वाले नवोदित नगर होगे। सरकार के विकेन्द्रीकरण नीति तथा सड़कों के सघन विकास के फलस्वरूप दो सड़कों के कटान बिन्दु नये नगरों के विकास हेतु उपयुक्त स्थल प्रस्तुत करते हैं; जिन्हे विकास केन्द्र के रूप में विकसित कर अध्ययन क्षेत्र का समग्र विकास कराया जा सकता है। वर्तमान समय में जनपद में 8 नगरीय केन्द्र स्थित हैं, संक्षेप में स्वतंत्रोत्तर भारत में नगरीयकरण के लिए अनुकूल पर्यावरण उपस्थित हुआ है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने नगरों के उद्भव एवं विकास को अधिक प्रोत्साहित किया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनपद में प्राग्ऐतिहासिक काल के अधिकांश नगरों के भग्नावशेष मात्र अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान है। केवल जमानियाँ विभिन्न कालो के उतार–चढ़ाव को देखता हुआ आज भी जीवित है, ऐतिहासिक विकास के साथ इनकी संख्या मध्यकाल में धीमी गति से बढी है, लेकिन आधुनिक काल में विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक परिवर्तनों के फलस्वरूप, इनकी संख्या में तीव्रतर वृद्धि हुई है तथा भविष्य में इनकी संख्या तीव्र गति से बढ़ने की प्रत्याशा है। विभिन्न कालों में उद्भूत नगरों की सूची तालिका 1.1 व मानचित्र संख्या 1. 1 में प्रदर्शित है।

सन्दर्भः

शर्मा, एस एल 1990 : ओरिजिन एण्ड ग्रोथ आफ रूरल सर्विस सेन्टर्स, न्यू डेलही, क्राइटेरियन पब्लिकेशन

कनिंघम 1907 : एन्सियेंट ज्याग्रफी आफ इण्डिया, जे ए एस बी,

मुखर्जी आर के 1950 : हिन्दू सिविलाइजेशन, वम्बई, भारती विद्या भवन

मजूमदार आर सी : दी हिस्टी एण्ड कल्चर आफ इण्डियन पीपुल वाल्यूम 01

मजूमदार, आर सी 1977 एन्सियेंट इण्डिया, दिल्ली, मोती लाल वनारसी दास

प्रसाद, आई 1947 : हिस्टी आफ इण्डिया, इलाहाबाद, इण्डियन प्रेस

सांख्यिकी पत्रिका 2015,

वील, एस : वुद्धिस्ट रेकार्ड आफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड वाल्यू 02

चौधरी 1965 : दी कान्टिनेन्ट आफ सिटीज, वम्बई, जयको

चटर्जी, एस पी 1983 : इवाल्यूशन आफ ह्यूमन सेटलमेंट इन इण्डिया सिन्स दी डॉन आफ सिविलाइजेशन, कान्सेंप्ट एण्ड अप्रोचेज, सिरीज 1 इन कान्टीव्यूशन टू इण्डियन ज्याग्रफी एडीटेड बाई आर पी मिश्रा, नई दिल्ली

जैन, आर सी 1964 : मोस्ट एन्सियेंट आर्यन सोसाइटी, वाराणसी

नेविल, एच आर : गाजीपुर गजेटियर

ओझा, एस एस 2005 : ज्योग्रफिकल एटलस,

गुहा बी एस 1937 : एन आउटलाइन आफ दी रेसियल एथनोलाजी आफ इण्डिया